माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 13 मार्च 2016 को पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ के दीक्षांत समारोह में दिया गया भाषण।

Renowned scientist and recipient of Doctor of science degree Prof. Harkishan Sing ji, Renowned Historian and social scientist and recipient of Gyan Rattan Award Prof. J.S. Grewal, Renowned sport icon Sh. Balbir Singh, Vice Chancellor of this renowned university Prof. Arun Kumar Grover Ji, Registrar of the University, Former Vice Chancellors, Members of senate and syndicate, Faculty members, invited dignitaries, Guardians, Media persons और जिनको आज उपाधि दी जा रही है ऐसे इस अवसर पर उपस्थित सभी मेरे प्यारे छात्र, भाईयो व बहनो!

यह अपने जीवन का और इस विश्वविद्यालय का भी बहुत सुंदर और सुनहरा अवसर होता है जब हम दीक्षांत समारोह में आपको उपाधि देते हैं और साथ–साथ आशीर्वाद भी देते हैं। इतना सुन्दर निहितार्थ इस आयोजन का होने का कारण यह आयोजन अपने आपमें गंभीर और प्रेरणादायी बन जाता है। आज जब सभी नौजवानों को हम इस स्थिति में देख रहे हैं, जब आप सुंदर वेशभूषा, मुस्कुराते हुए चेहरों के साथ उपस्थित हैं तो ऐसा लगता है कि एक बहुत सुंदर बगीचे का दृश्य यहाँ पर उपस्थित हो गया है जिसमें विभिन्न प्रकार के फूल खिले हैं। वैसे भी आप सब इस होनहार राष्ट्र के बगीचे ही हैं। आपके प्रयत्न से, प्रयास से और परिश्रम से पूरे देश को महक प्राप्त होगी, प्रगति के नए–नए रास्ते खुलेंगे।

जैसे ही आपका कार्यक्रम प्रारंभ हुआ तो पंजाब विश्वविद्यालय के बारे में 1882 से लेकर अब तक का पूरा चित्रण प्रस्तुत किया जा रहा था। यह लाहौर में प्रारंभ हुई। देश स्वतंत्र होने के बाद, देश का विभाजन होने के बाद 1956 में यह यहाँ पर आ गई। मैं सोच रहा था कि यह सब तो आपको मालूम होगा। फिर बार–बार आपको इस विश्वविद्यालय के बारे में जानकारी क्यों दी जा रही है? यह पुस्तक में भी होगी, आपको युनिवर्सिटी की जो प्रोस्पैक्टस प्राप्त होती है उसमें भी होगी और आप ये जानकारी नैट पर भी प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन इसका उद्देश्य मुझे एक ही नजर आ रहा था कि जब आप इस युनिवर्सिटी की डिग्री प्राप्त कर रहे हैं तो इस विश्वविद्यालय की श्रेष्ठता, इस विश्वविद्यालय की गरिमा, इस विश्वविद्यालय का गौरव, इनको ध्यान में रखिए और उसके आधार पर आप भी जीवन में गौरवान्वित होइए।

आप जब समाज में विचरण करेगें तो लोग पूछेंगे कि आपने डिग्री किस युनिवर्सिटी से प्राप्त की है? चाहे आप किसी इंटरव्यू में जाइए या कहीं पर भी परिचय कराइए तो आपके साथ इस युनिवर्सिटी का नाम जुड़ेगा। युनिवर्सिटी का नाम जुड़ना तो बहुत अच्छी बात है। लेकिन उस युनिवर्सिटी का गौरव, उस युनिवर्सिटी की शान इसको अपने जीवन में रखना ये और भी ज्यादा महत्वपूर्ण है। इसीलिए यह आपको याद दिलाया जा रहा था। वैसे मैं कई दृष्टियों से मैं आप सबको बहुत भाग्यशाली मानता हूँ। क्योंकि आपने

इस विश्वविद्यालय में पढ़ाई की है। आपके जीवन के होनहार क्षण इस विश्वविद्यालय में बीते हैं। समाज के अंदर श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिए, अच्छे काम करने के लिए आपने प्रशिक्षण, संस्कार यहीं पाए हैं और जीवन का महत्वपूर्ण भाग इस विश्वविद्यालय में बिताया है।

अभी जब मैं विश्वविद्यालय के बारे में सुन रहा था कि 2015 में या हो सकता है इससे पहले भी यह विश्वविद्यालय टाइम्स हायर एजुकेशन एशियन युनिवर्सिटी रैंकिग में देश में नम्बर एक विश्वविद्यालय है। और जब आप इस देश के नम्बर एक विश्वविद्यालय में पढ़े हैं, डिग्री प्राप्त की है तो हम सोचते हैं और अपेक्षा करते हैं कि आप नम्बर एक क्यों नहीं होंगे? लेकिन नम्बर एक कहने से नम्बर एक नहीं होते। हमको अपनी विद्वता से, अपनी प्रामाणिकता से, अपनी इमानदारी से, अपने व्यक्तित्व से और अपने परिश्रम की पराकाष्ठा से जहाँ–जहाँ भी जाएँगे आपको सिद्ध करना पड़ेगा कि आप नम्बर एक हैं। जब आपको उपाधि दी जा रही हो तो यह संकल्प आपके मन और मस्तिष्क पर अंकित होना चाहिए। आपके अंतःकरण में यह संदेश विराजमान होना चाहिए कि हम अपने जीवन में जहाँ कहीं भी जाएँगे वहाँ अपनी उत्कृष्ठता से अपनी नम्बर एक की स्थिति आपको प्राप्त करनी है।

यह विश्वविद्यालय देश में ही नम्बर एक हो, ऐसा नहीं है। यह विश्वविद्यालय बहुत विशाल है। जब देश स्वतंत्र हुआ तब तो विश्वविद्यालयों की संख्या बहुत कम थी। There were only 27 universities. सिर्फ 27 विश्वविद्यालय थे। आज देश में विश्वविद्यालय तो कई गुणा हो गए। 740 विश्वविद्यालय हैं। उनमें deemed universities भी हैं, private universities भी हैं, Government universities भी हैं और Central universities भी हैं। लेकिन 740 में से Central universities सिर्फ 46 हैं और आप उन 46 में भी नम्बर एक हैं। टाइम्स हायर एजुकेशन एशियन युनिवर्सिटी रैंकिग में सिर्फ हिन्दुस्तान में नहीं पूरे एशिया महाद्वीप में जितने विश्वविद्यालय हैं, उनमें से जो 38 श्रेष्ठ विश्वविद्यालय हैं उनमें से आप एक हैं।

एक दूसरी बात और भी है। अपने देश में कितने लोग हैं जो इस स्तर तक आ पाते हैं, जिनको ये डिग्री प्राप्त हो पाती है? जो अवसर आपको मिला है। अभी शिक्षा के क्षेत्र में और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में तो देश काफी पीछे है। अपने यहाँ सिर्फ 10 प्रतिशत लोग ही पढ़ पाते हैं। इस तरह अपने देश का जो 10 प्रतिशत है उसमें से आप एक हैं तो सोचो देश की कितनी अपेक्षाएँ हैं आपसे देश को। ये जो 10 प्रतिशत है, अमेरिका का प्रतिशत क्या है? अमेरिका का प्रतिशत 83 है। यह तो हम उच्च शिक्षा की बात कर रहे हैं, नीचे की स्थिति तो और खराब है। यद्यपि देश में Right to education दिया है, हम प्रत्येक को शिक्षा देगें। मैं नहीं सोचता कि शिक्षा के बिना कोई व्यक्ति देश के लिए उपयोगी हो सकता है, राष्ट्र का स्वाभिमान उसके मन में जाग सकता है और वो नैतिक हो सकता है, वह अच्छा कर्म करने वाला व्यक्ति बन सकता है, बिना शिक्षा के।

मैं यह कहता हूँ तो शिक्षा का मतलब केवल literacy नहीं है। शिक्षा का मतलब reading, writing और arithmetic नहीं है, शिक्षा का मतलब 3R नहीं है। शिक्षा का मतलब है– व्यक्ति का संपूर्ण विकास। जो आपकी Inherent qualities हैं, जो potential आपके अंतःकरण में विराजमान हैं, आपके अंदर जो ईश्वर प्रदत natural capability हैं, वे सब की सब सुप्त हो जाएँगी, सब की सब मर जाएँगी जब तक इनको exposure नहीं मिलेगा, जब तक समाज के अंदर इनका manifestation नहीं होगा और जब तक उनको विकसित नहीं किया जाएगा। इस लिए व्यक्ति के अंदर के potential को विकसित करके उसे समाज के लिए उपयोगी बनाना–ये होती है शिक्षा। आप सब पढ़ना–लिखना और हिसाब लगाना जानते हैं then you are literate, but you are not educated.

इस पर आप विचार करेंगे तो जानेंगे कि देश के लिए शिक्षा कितनी जरूरी है, प्रत्येक व्यक्ति के लिए शिक्षा कितनी जरूरी है। बिना शिक्षा क्या आप देश के लिए उपयोगी बन सकते हैं? आप समाज के लिए उपयोगी नहीं, बोझ बनेगें, आप परावलंबी बनेंगे, स्वावलंबी नहीं। जब देश के प्रधानमंत्री जी कहते हैं कि हम एक कदम आगे जाएंगे। सोचो जब सब एक कदम आगे जाएँगे तो देश कितने कदम आगे जाएगा। 125 करोड़ कदम आगे जाएगा। लेकिन 125 करोड़ कदम आगे तो तब जाएगा जब सब एक कदम तो आगे जाएं। अगर 125 करोड में से कुछ एक कदम आगे जाने की बजाय एक कदम पीछे जाएं तब क्या होगा ? देश में वही हो रहा है। सब लोग आगे नहीं बढ़ रहे। कुछ तो बढ़ने ही नहीं दे रहे और कुछ लोग नेगेटिव हैं जो पीछे जा रहे हैं। देश की प्रगति का संबंध प्रत्येक व्यक्ति से है और प्रत्येक व्यक्ति देश की प्रगति के लिए तब सहयोगी जब हो सकता है जब देश के लिए जिस तरह के नागरिकों की आवश्यकता है वैसी शिक्षा उनको बचपन में दी जाए, Teen age में दी जाए।

हरियाणा सरकार ने पंचायत अधिनियम में एक निर्णय लिया था कि हम पंचायत चुनाव लड़ने की अनुमति उसे देंगे जो दसवीं पास हो। सिर्फ दसवीं की बात की थी। महिलाओं को relexation दिया था कि वे आठवीं पास हों। SC और ST के लिए भी आठवीं पास की बात थी। पंचों के लिए सामान्य उम्मीदवार आठवीं पास और महिलाएँ व SC, ST पाँचवीं पास हों। यह छोटी सी शर्त लगाई थी। लेकिन जब ये पंचायत अधिनियम कोर्ट में चला गया और कोर्ट में न्यायधीश ने यह प्रश्न पूछा कि स्वतंत्रता के इतने साल बाद, लगभग 68 वर्ष बीत जाने के बाद भी आप सबको शिक्षा नहीं दे पाए तो आप कैसे मान लोगे कि सब लोग इसके योग्य होंगे। आप उनको वंचित नहीं कर रहे? यह स्थिति बताती है हम कहाँ हैं। यह तो अच्छा हुआ कि हाईकोर्ट के बाद जब केस सुप्रीम कोर्ट में चला गया और सुप्रीम कोर्ट ने देश की आवश्यकता समझते हुए इस पर मोहर लगा दी। लेकिन स्थिति तो वास्तव में यही है ना।

मैं एक बात और कहूँ। उत्तर प्रदेश सरकार को 165 चपरासी चाहिएं थे। इसके लिए सरकार ने विज्ञापन निकाला कि Apply for the post of Peon. Minimum qualification पाँचवीं पास and you should know cycling. आपको साइकिल चलाना आना चाहिए। This was the minimum qualification for the post. लेकिन जब उसकी रिपोर्ट पढ़ने को मिली तो पता चला कि अप्लाई करने वालों की संख्या 25 लाख थी। यह सुनकर और भी आश्चर्य हुआ कि अप्लाई करने वाले PHD भी थे, MA और BA भी थे, इंजीनीयर भी थे। इसमें दो बातें हो सकती हैं। एक तो बेरोजगारी भी हो सकती है और दूसरा ये भी हो सकता है कि इतनी पढ़ाई–लिखाई के बाद भी आपमें योग्यता ही नहीं है, आप में कौशल ही नहीं है, आप में हुनर ही नहीं है, आप कुछ कर ही नहीं सकते। और फिर आप कैसे कहेंगे कि इतनी बड़ी संख्या में वे लोग देश के लिए asset हैं, They are only burden on the country. जब ऐसी स्थिति बनी तो न्युज चैनल वाले उन PHD वालों के पास पहुँच गए। उनका जब इंटरव्यू लिया और उनसे पूछा कि आप चपरासी क्यों बनना चाहते हैं तो उन्होंने जवाब दिया कि चपरासी इसलिए बनना चाहते हैं क्योंकि खाने के लिए रोटी तो चाहिए। चपरासी बनकर 15 हजार रूपये महीना मिलेगा तो कम से कम पेट तो भर सकेगें।

मुझे लगता है आपकी किसी की भी ऐसी स्थिति नहीं होगी। क्योंकि आपने इस युनिवर्सिटी में शिक्षा प्राप्त की है। आप अपनी कुशलता के आधार पर, अपनी परिपक्वता के आधार पर, अपनी स्किल के आधार पर समाज के लिए अवश्य उपयोगी होंगे।

एक बात का और ध्यान रखें कि आपको इस स्थिति में लाने के लिए परिवार का कितना योगदान रहा होगा। आप में से कई व्यक्ति ऐसे होंगे जिनके परिवार गरीब होगें, साधन संपन्न नहीं होंगे। लेकिन फिर भी सब चीजों में कटौती करके उन्होंने आपको पढ़ाया होगा। और जब पढ़ाया होगा तो आपसे कुछ अपेक्षाएँ भी की होंगी। हर परिवार की अपनी एक शान होती है, अपनी एक पहचान होती है। आप उस शान और पहचान को बढ़ाना। माता–पिता की आपको यहाँ तक लाने के लिए जो इच्छाएँ हैं उन सबकी पूर्ति करना आप सबका कर्त्तव्य ही नहीं बल्कि आप पर ऋण है जिसे चुकाने के लिए आप को कटिबद्ध होना होगा। यह त्याग सिर्फ परिवार ने किया है ऐसा नहीं है। यह त्याग समाज और राष्ट्र ने भी किया है। आप जिस कॉलेज में पढ़ते होंगे, आप जिस युनिवर्सिटी में हैं वहाँ आपके प्रोफेसर्ज ने आपको पढ़ाया होगा। यह कैंपस, ये फैक्लटी मैम्बर्ज, आखिर वे सारी की सारी चीजें जिन्होंने आपको इस योग्य बनाया है, इन सब के पीछे कौन है? कहाँ से इनको वेतन मिलता है, कहाँ से इन्फरास्ट्रक्चर खड़ा होता है। राष्ट्र ने इन सब पर कितना खर्च किया?

इसलिए परिवार के प्रति, समाज के प्रति और राष्ट्र के प्रति यह जो ऋण बनता है हमें इस योग्य बनाने के लिए, वह चुकाना हमारा कर्त्तव्य होगा। इसलिए दीक्षांत समारोह में जब आपको उपाधि दे रहे हैं, आशीर्वाद भी दे रहे हैं, अच्छा भी लग रहा है तो एक दक्षिणा भी माँग रहे हैं कि कभी अपने जीवन के अंदर ऐसी स्थिति मत आने देना जिसके

कारण हमारे परिवार की, माता–पिता की, इस राष्ट्र की, इस देश की, समाज की और इस युनिवर्सिटी की शान कहीं पर भी कम हो। इन्हीं शब्दों के साथ बहुत–बहुत आशीर्वाद।

धन्यवाद।